



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1723]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 10, 2008/अग्रहायण 19, 1930

No. 1723]

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 10, 2008/AGRAHAYANA 19, 1930

लोक सभा सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 2008

का.आ. 2858(अ).—लोक सभा अध्यक्ष का भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन दिनांक 10 दिसम्बर, 2008 का निम्नलिखित विनिश्चय एतद्वारा अधिसूचित किया जाता है :—

“माननीय लोक सभा अध्यक्ष के समक्ष

संसद भवन, नई दिल्ली

श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोक सभा)

मुख्य सचेतक, बीजू जनता दल,

144, संसद भवन,

नई दिल्ली।

(आवास) एबी-94, शाहजहाँ रोड,

नई दिल्ली-110001

याची

बनाम

श्री हरिहर स्वाई, संसद सदस्य (लोक सभा)

दिल्ली आवास : 43, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली-110001

स्थायी निवास :

(i) देवभूमि, पोस्ट आफिस-आस्का, जिला गंजाम, उड़ीसा

(ii) 18, नीलकंठ नगर, भुवनेश्वर, उड़ीसा

प्रत्यक्षी

के मामले में :

4831 GI/2008

आदेश :

1. यह आवेदन लोक सभा में बीजू जनता दल (जिसे इसमें इसके पश्चात् बीजद कहा गया है) के मुख्य सचेतक श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य, लोक सभा द्वारा प्रत्यक्षी श्री हरिहर स्वाई, लोक सभा सदस्य के विरुद्ध दाखिल किया गया है जिसमें प्रत्यक्षी को भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन वर्तमान लोक सभा का सदस्य होने और बने रहने से निरर्थक करने के लिए प्रार्थना की गई है।

2. याची के अनुसार प्रत्यक्षी मई, 2004 में हुए निर्वाचन में उड़ीसा के आस्का संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से बीजू जनता दल के टिकट पर निर्वाचित हुए थे और उनका नाम लोक सभा की बीजक सदस्यों की सूची में शामिल है।

3. याचिका में यह कहा गया है कि लोक सभा का दो दिन का विशेष सत्र, जो भारत के प्रधानमंत्री द्वारा विश्वास मत हासिल करने के लिए 21 और 22 जुलाई, 2008 को बुलाया गया था, के लिए बीजद ने 19 जुलाई, 2008 को लोक सभा में अपने सभी सदस्यों, जिनमें प्रत्यक्षी भी शामिल है, को सभा में 21 और 22 जुलाई, 2008 को उपस्थित रहने और केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान करने के लिए तीन पंक्ति का व्हिप जारी किया था। व्हिप की एक प्रति याचिका में दी गई है।

4. याची के अनुसार, इस प्रस्ताव पर मतदान 22 जुलाई, 2008 को हुआ और बीजद द्वारा, जिसकी टिकट पर प्रत्यक्षी लोक सभा में चुने गए थे, उन्हें व्हिप जारी किए जाने के बावजूद, उन्होंने प्रस्ताव के खिलाफ मतदान करने की बजाय, पार्टी व्हिप और निदेशों का घोर उल्लंघन करते हुए, प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया।

5. याची का कथन है कि प्रत्यक्षी की कार्रवाई भारत के संविधान के पैरा 2(1) के तहत आती है अतः प्रत्यक्षी वर्तमान लोक सभा का सदस्य बने रहने के अयोग्य हो गए हैं। अतः, उन्होंने तदनुसार आदेश किए जाने की प्रार्थना है।

(1)

6. याची का मामला है कि 19 जुलाई, 2008 को प्रत्यर्थी सहित बीजद के सभी सांसदों को एक तीन पंक्ति का व्हिप जारी किया गया था और प्रत्यर्थी ने बीजद के लोक सभा सदस्यों के नाम वाले एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करके व्हिप की पावती स्वीकार की थी।

7. इसके अतिरिक्त, याची का कहना है कि 20 जुलाई, 2008 को पार्टी के नेता श्री बृज किशोर त्रिपाठी के निवास पर हुई भोज-बैठक में प्रत्यर्थी ने एक उपस्थिति शीट पर विधिवत् हस्ताक्षर किए हैं जिससे बैठक में उनकी उपस्थिति स्पष्ट होती है। यह उल्लेखनीय है कि उक्त बैठक में इस बारे में एक प्रस्ताव पारित किया गया था कि लोक सभा में बीजद के सदस्य सभा में उपस्थित रहेंगे, बहस में भाग लेंगे और विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान करेंगे। उपर्युक्त अवधारणा के समर्थन में याची ने मूल रूप में तीन दस्तावेज, नामतः प्रत्यर्थी द्वारा हस्ताक्षरित व्हिप पावती-रसीद, 20 जुलाई, 2008 को हुई बैठक की उपस्थिति-शीट और 20 जुलाई, 2008 को 9, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली में अपराह्न 1.00 बजे हुई बीजद की संसदीय दल की बैठक की कार्यवाही, प्रस्तुत की है। इन दस्तावेजों को इन कार्यवाहियों के एक भाग के रूप में दर्ज किया गया है।

8. प्रत्यर्थी ने लोक सभा के संयुक्त सचिव को संबोधित दिनांक 6 अगस्त, 2008 के अपने पत्र में यह दावा किया कि उन्हें कभी भी न तो लोक सभा के विशेष सत्र से पहले और न ही किसी अन्य समय में पार्टी की ओर से कोई व्हिप प्राप्त हुआ था। अपने पत्र के द्वारा उन्होंने कुछ दस्तावेजों की प्रतियों की मांग भी की थी जोकि उन्हें दे दी गई थीं। 6 अक्टूबर, 2008 को प्रत्यर्थी ने एक विस्तृत उत्तर दाखिल किया जिसमें उन्होंने अपनी बीमारी और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में अपने भर्ती रहने के बारे में बताया। प्रत्यर्थी ने अपने अंतिम उत्तर में यह दावा किया है कि वे 20 जुलाई, 2008 को संसद सदस्य श्री बृज किशोर त्रिपाठी के घर पर आयोजित भोज बैठक में उपस्थित थे और उन्होंने एक खाली कागज जो कि भोज बैठक में अपनी उपस्थिति दर्शाने के लिए उन्हें दिया गया, पर हस्ताक्षर भी किए थे। किंतु, कोई भी व्हिप उन्हें जारी नहीं किया गया या नहीं दिया गया।

9. प्रत्यर्थी के अनुसार भोज बैठक के दौरान बीजद के संसद सदस्यों को व्हिप जारी करने से संबंधित कोई चर्चा नहीं हुई और न ही वह अवसर ऐसा था कि बीजद के मुख्य सचेतक द्वारा पहले ही 19 जुलाई, 2008 को जारी किए गए व्हिप की प्राप्ति को महत्व दिया जाता। बहुत ही अनौपचारिक रूप से यह बात कही गई थी कि लोक सभा में बीजद के संसद सदस्य लोक सभा के विशेष सत्र के दौरान चर्चा में भाग लेंगे। उन्होंने यह भी दावा किया है कि उस दिन वे खाना खाए बिना ही वहाँ से चले गए थे। क्योंकि उन्हें अपनी "तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही थी"।

10. प्रत्यर्थी के अनुसार कुछ प्रस्ताव, जो 20 जुलाई, 2008 को रिकार्ड किए गए थे, बैठक में उनकी उपस्थिति तक (करीब एक घंटा) पास नहीं किए गए थे और उनके अनुसार संसद सदस्यों को केवल भोज में सम्मिलित होने के लिए कहा गया था। उन्होंने कथित रूप से कहा है कि मुझे शक है कि याची ने "नकली दस्तावेजों से माननीय अध्यक्ष महोदय को भ्रमित करने का प्रयास किया है और

कुछ काल्पनिक घटनाओं का गलत ढंग से प्रस्तुत किया है जिनमें लेशमात्र भी सच्चाई नहीं है"।

11. प्रत्यर्थी ने अपने उत्तर में यह दावा भी किया है कि एक खाली कागज पर जिस पर उनके बिना तिथि के हस्ताक्षर थे, बाद में प्रक्षेपांक किया गया ताकि उनके और अन्य सदस्यों के हस्ताक्षरों को साबित किया जा सके जोकि किसी अन्य अवसर पर लिए गए होंगे। प्रत्यर्थी द्वारा प्रस्तुत की गई अभिस्वीकृति इस प्रकार है :—

"लोक सभा में बीजू जनता दल के सभी संसद सदस्यों को बीजद के मुख्य सचेतक द्वारा दिनांक 19-7-2008 को जारी किए गए तीन पंक्तियों के व्हिप की पावती।"

12. प्रत्यर्थी ने इसके अतिरिक्त तर्क दिया है कि दिनांक 19 जुलाई, 2008 को उनसे कोई ऐसी पावती कभी नहीं ली गयी और न ही उन्हें कोई व्हिप दिया गया। प्रत्यर्थी ने तर्क दिया है कि याची द्वारा उल्लिखित दस्तावेज कपटपूर्ण एवं मनगढ़ंत है तथा याची की कार्यवाही असम्भावपूर्ण है।

13. अतः, प्रत्यर्थी के अनुसार, यद्यपि वे 9, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली में दिनांक 20 जुलाई, 2008 को हुई बैठक में उपस्थित थे जहाँ बीजू जनता दल के संसद सदस्य एकत्रित हुए थे और सभी ने एक उपस्थिति पत्र पर हस्ताक्षर किया था, उन्हें किसी संकल्प के पारित होने की जानकारी नहीं है और न ही उनकी उपस्थिति में कोई संकल्प प्रस्ताव लाया गया। पूर्व में उल्लिखित पावती संबंधी दस्तावेज के बारे में प्रत्यर्थी का तर्क है कि यह दस्तावेज छलसाधित है और इसे बाद में तैयार किया गया है।

14. मैंने 26 सितम्बर, 2008 को दोनों पक्षों की व्यक्तिगत सुनवाई की जिसमें याची उपस्थित थे। सुनवाई के दौरान मैंने दिनांक 12 सितम्बर, 2008 का एक पत्र पढ़ा जो प्रत्यर्थी की ओर से प्राप्त हुआ था और जिसमें उन्होंने लिखा था कि उन्हें उन परिस्थितियों को जिनमें उन्होंने लोक सभा में विश्वास पर अपना वोट दिया था, स्पष्ट करने के लिए एक मौका दिया जाये परंतु अपनी अस्वस्थता की वजह से वे व्यक्तिगत सुनवाई के लिए उपस्थिति होने के लिए कुछ समय चाहते थे। उस पत्र में उन्होंने आगे यह उल्लेख किया था कि यदि व्यक्तिगत सुनवाई के लिए कोई समय नहीं दिया जाता है तो दिनांक 6 सितम्बर, 2008 के उनके उत्तर पर मेरे द्वारा निर्णय के लिए विचार किया जाये।

15. उपर्युक्त सुनवाई में याची ने कुछ निवेदन किए जैसा कि उस तारीख की व्यक्तिगत सुनवाई के कार्यवाही सारांश से प्रतीत होता है। तथापि, प्रत्यर्थी द्वारा किये गये अनुरोध को देखते हुए मैंने अगली सुनवाई के लिए दिनांक 17 अक्टूबर, 2008 को सायं 3 बजे का समय नियत किया तथा अपने कार्यालय को इस आदेश की सूचना प्रत्यर्थी को देने का निदेश दिया।

16. 17 अक्टूबर, 2008 को हुई सुनवाई में याची उपस्थित था लेकिन प्रत्यर्थी उपस्थित नहीं था। याची ने दावा किया कि प्रत्यर्थी ने इस तथ्य को स्वीकार किया था कि उसने 20 जुलाई, 2008 को हुई संसदीय पार्टी बैठक में भाग लिया था और मामले पर उसी प्रकार से निर्णय किया जाना चाहिए। इस दौरान, स्वयं को प्रत्यर्थी का पुत्र बताने वाले श्री रतन स्वाई ने एक पत्र (बिना किसी तारीख के) भेजा

जिसमें कहा गया था कि उसके पिता श्री हरिहर स्वाई बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती हैं और इस मामले की सुनवाई में भाग लेने की स्थिति में नहीं हैं और पत्र के साथ आयुष अस्पताल, भुवनेश्वर का एक चिकित्सा प्रमाणपत्र भी भेजा गया था। मैं प्रत्यर्थी की अनुपस्थिति में मामले की सुनवाई नहीं करना चाहता था क्योंकि ऐसा करना नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन माना जाता, इसलिए मैंने इस निदेश के साथ मामले की सुनवाई शुक्रवार, 31 अक्टूबर, 2008 को सांय 5 बजे नियत कर दी कि प्रत्यर्थी को यह सूचित किया जाए कि यदि दुर्भाग्यवश, वह बैठक में उपस्थित न हो सके तो सुनवाई, जो कि अग्रक्रियात्मक रूप से नियत की गई है और जिसके लिए आगे और स्थगन नहीं दिया जाएगा, में उपस्थिति के लिए वह अपने वकील या प्रतिनिधि को भेज सकते हैं। मैंने निदेश दिया था कि मेरा आदेश प्रत्यर्थी और उनके पुत्र श्री रतन स्वाई को भेजा जाए। मैं धन्यवाद देता हूँ कि श्री माहताब ने स्थगन पर आपत्ति नहीं की क्योंकि प्रत्यर्थी की बीमारी के कारण मैं उन्हें एक और अवसर देना चाहता था।

17. व्यक्तिगत सुनवाई की अंतिम तारीख 31 अक्टूबर, 2008 थी जिसमें याची और श्री रतन स्वाई, जो कि अपने पिता, प्रत्यर्थी, का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, उपस्थित हुए। याची ने अपने इस दावे को दोहराया कि प्रत्यर्थी ने 20 जुलाई को हुई पार्टी की बैठक में भाग लिया था और व्हिप की पावती पर हस्ताक्षर किए थे और वहां पर रिकॉर्ड किए गए संकल्प के पक्षकार थे, याची ने आग्रह किया कि प्रत्यर्थी को, विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मत देकर सचेतक के विरुद्ध मत डालने के कारण निर्ह किया जाए।

18. श्री रतन स्वाई ने सुनवाई के दौरान जो कहा है मैं उसे उद्धृत करता हूँ :

"महोदय, मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं केवल यह बताना चाहता हूँ कि पिछले दो महीनों से वे बीमार चल रहे हैं। उन्हें पहले भुवनेश्वर के आयुष अस्पताल में भर्ती किया था और फिर वहां से उन्हें आयुर्विज्ञान संस्थान भेजा गया था। पिछले एक सप्ताह से वे दिल्ली में हैं।"

अध्यक्ष महोदय : अच्छा वह बीमार हैं। क्या वे अब भी अस्पताल में हैं?

श्री रतन स्वाई : जी हाँ। वह अब भी अस्पताल में हैं।

19. उक्त सुनवाई के दौरान मेरे एक प्रश्न के उत्तर में याची ने दोहराया कि उन्हें यह जानकारी थी कि 19 जनवरी, 2008 को प्रत्यर्थी तथा उनकी पार्टी के सभी सदस्यों को व्हिप जारी किया गया था और उस पर कुछ सदस्यों ने दिनांक सहित अपने हस्ताक्षर किए थे तथा कुछ ने नहीं। बाद में 20 जुलाई, 2008 को उनके नेता के निवास पर दोपहर की बैठक में एक संकल्प भी पारित किया गया था और उसके बाद दोपहर का भोजन था जिसमें प्रत्यर्थी शामिल नहीं हुए थे।

20. सुनवाई के दौरान, प्रार्थी ने व्हिप जारी होने की पावती संबंधी पूर्व उल्लिखित दस्तावेज तथा 20 जुलाई, 2008 को दोपहर के भोजन के समय की बैठक की कार्यवाही संबंधी दस्तावेज भी पेश किए थे। जब मैंने उनसे विशेष रूप से प्रश्न किया तो श्री रतन स्वाई ने कहा कि इस मामले में उन्हें कुछ नहीं कहना है।

21. संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1) (ख) में प्रावधान है कि पैरा 4 और 5 के उपबंधों के अनुसार यदि सदन में किसी भी पार्टी का कोई सदस्य यदि अपने राजनीतिक दल से पूर्वानुमति किए बिना अपना वोट देने या वोट न देने के लिए अपने राजनीतिक दल से माफी प्राप्त किए बिना अपने राजनीतिक दल द्वारा जारी किसी भी निर्देश का उल्लंघन करते हुए वोट देता है अथवा वोट नहीं देता है तो उसे सदन की सदस्यता से निरहृत कर दिया जाएगा। मौजूदा मामले में पैरा 4 एवं 5 लागू नहीं हैं।

22. डॉ. महाचन्द्र प्रसाद सिंह बनाम सभापति, बिहार विधान परिषद् तथा अन्य (2004) 8 एससीसी 747, के निर्णय में माननीय उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की है कि दसवीं अनुसूची के अधीन "सभा के सदस्य की निरहृता के मुद्दे पर निर्णय करने का अंतिम प्राधिकार सभा के सभापति या अध्यक्ष में निहित है। यह ध्यान देने योग्य है कि दसवीं अनुसूची में सभा के सभापति या अध्यक्ष को कोई विवेकाधिकार नहीं दिया गया है। उनकी भूमिका केवल संबद्ध तथ्यों को सुनिश्चित करने तक ही सीमित है। एक बार एकत्रित अथवा प्रस्तुत तथ्यों से यह प्रकट होने पर कि सभा के किसी सदस्य ने ऐसा कोई कृत्य किया है जो दसवीं अनुसूची के पैरा 2 के उप-पैरा (1), (2) या (3) की परिधि में आता है, निरहृता लागू होगी और सभा के सभापति या अध्यक्ष को इस आशय का निर्णय लेना होगा।"

23. जैसाकि पहले बताया गया है मैंने पक्षकारों को अपने-अपने मामलों को प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तिगत सुनवाई का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जिसके लिए मैंने तीन बैठकें आयोजित की। मैंने प्रत्यर्थी द्वारा दाखिल किए गए उत्तरों और विवरणों पर पूरी तरह से विचार किया और मैंने याची को व्यक्तिगत रूप से भी सुना। अभिवचनों और दस्तावेजों तथा व्यक्तिगत सुनवाई के अभिलेखों से मेरी यह राय है कि प्रत्यर्थी ने 22 जुलाई, 2008 को राजनीतिक दल, बीजद, जिससे वे संबंध रखते हैं, द्वारा जारी निदेश के विरुद्ध, उनके द्वारा व्हिप प्राप्त किए जाने के बावजूद सभा में मतदान किया।

24. मेरी राय में, याची के मेरे समक्ष प्रस्तुत मौखिक वक्तव्यों के अलावा दस्तावेजी साक्ष्य, विधिवत् रूप से यह सिद्ध करते हैं कि यद्यपि प्रत्यर्थी बीमार थे, फिर भी उन्होंने 20 जुलाई, 2008 को मध्याह्न भोज तथा सभा की कार्यवाही में भाग लिया था और उन्होंने पार्टी व्हिप और निदेश के विरुद्ध प्रस्ताव के पक्ष में अपना मतदान किया। मेरे पास याची के विवरण और मेरे समक्ष प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्य को अमान्य करने की कोई वजह नहीं है और इसके विपरीत कोई विश्वसनीय साक्ष्य भी नहीं है।

25. अतः मेरे समक्ष प्रस्तुत सामग्रियों पर उत्सुकता से विचार किए जाने के पश्चात् तथा इस तथ्य पर विचार करते हुए कि प्रत्यर्थी ने इस बात को स्वीकार किया है कि वे 20 जुलाई, 2008 को बीजेडी की बैठक में उपस्थित थे और उन्होंने दो दस्तावेजों, जैसाकि ऊपर बताया गया है, पर हस्ताक्षर किए और यह माना है कि वे उनके हस्ताक्षर हैं मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्यर्थी ने उनकी पार्टी द्वारा उन्हें जारी किए गए व्हिप का उल्लंघन करते हुए प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया।

26. अध्यक्ष के रूप में मेरा यह प्राथमिक दायित्व है कि संगत तथ्यों का पता लगाऊँ, जैसा कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने निर्णय

दिया है। इस निष्कर्ष पर पहुँचते हुए कि प्रत्यर्थी ने 22 जुलाई, 2008 को उसके दल के निदेश के विरुद्ध विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया, प्रत्यर्थी का यह कृत्य संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अंतर्गत आता है तथा मैं तदनुसार विनिश्चय करता हूँ।

27. अतः मेरा यह निर्णय है कि प्रत्यर्थी, श्री हरिहर स्वाई, जो उड़ीसा के आस्का संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के निर्वाचित सदस्य हैं, 22 जुलाई, 2008 को हुए मतदान में भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पेश किए गए विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में अपना मत देने के कारण भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अंतर्गत निरह हो गए हैं।

28. इस प्रकार, प्रत्यर्थी 14वीं लोक सभा का सदस्य बने रहने के लिए निरह हो गए हैं और यह घोषित किया जाता है कि उनका स्थान रिक्त हो गया है।

नई दिल्ली;

ह./-

10 दिसम्बर, 2008

सोमनाथ चटर्जी, अध्यक्ष"

[सं. 46/24/2008/टी.]

पी. डी. टी. आचारी, महासचिव

LOK SABHA SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi the 10th December, 2008

S.O. 2858(E).—The following Decision dated 10th December, 2008 of the Speaker, Lok Sabha given under the Tenth Schedule to the Constitution of India is hereby notified:—

"BEFORE THE HON'BLE SPEAKER, LOK SABHA

PARLIAMENT HOUSE

NEW DELHI

IN THE MATTER OF:

Shri Bhatruhari Mahtab, Member of Parliament (LS)

Chief Whip, Biju Janata Dal,

144, Parliament House,

New Delhi.

(Res.) AB-94, Shahjahan Road,

New Delhi-110001

... Petitioner

Versus

Shri Harihar Swain, Member of Parliament (LS)

Delhi Address:

43, South Avenue, New Delhi-110001

Permanent Address:

(i) AT-Debabhumi

P.O.-Aska, Distt, Ganjam, Orissa.

(ii) 18, Nilakanth Nagar,

Bhubaneswar, Orissa

... Respondent

Order

1. This is an application filed by Shri Bhatruhari Mahtab, Member of Parliament, Lok Sabha and Chief Whip,

Biju Janata Dal (hereinafter referred to as BJD) against the Respondent Shri Harihar Swain, Member of Lok Sabha, praying for the disqualification of the Respondent for being and continuing as a Member of the present Lok Sabha under the Tenth Schedule to the Constitution of India.

2. According to the Petitioner, the Respondent was elected to Lok Sabha from Aska Lok Sabha Constituency in Orissa in the election held in May, 2004 on the Biju Janata Dal ticket and that the name of Respondent is entered in the list of BJD Members of Lok Sabha.

3. In the Petition, it has been stated that for the two days' Special Session of Lok Sabha, which was summoned for 21 and 22 July, 2008 to enable the Prime Minister of India to seek the Vote of Confidence, the BJD on 19 July, 2008 issued a Three Line Whip to all its Members in Lok Sabha, including the Respondent, to be present in the House on 21 and 22 July, 2008 and vote against the Motion of Confidence in the Union Council of Ministers. A copy of the Whip has been set out in the Petition.

4. According to the Petitioner, the voting on the motion took place on 22 July, 2008 and in spite of the Whip having been issued to him by the BJD, on whose ticket the Respondent was elected to Lok Sabha, the Respondent, instead of voting against the motion, voted in favour of the motion, in gross violation of the Party Whip and direction.

5. The Petitioner has contended that the act of the Respondent falls under Paragraph 2(1)(b) of the Constitution of India and as such, the Respondent is disqualified for being and continuing as a Member of the present Lok Sabha. He has prayed for an order accordingly.

6. The petitioner's case is that on 19 July, 2008 a three line whip was issued to all the BJD members including the respondent and that the respondent acknowledged the receipt of the whip by signing a document containing the names of Members of Parliament (LS) belonging to BJD where the respondent's signature duly appears.

7. Further, the petitioner has contended that on 20th July, 2008 a luncheon meeting was held at the residence of the party's leader Shri Braja Kishore Tripathy, in the attendance sheet of which, the respondent duly signed, signifying his presence at the meeting. It is stated that at the said meeting, a resolution was passed that the members of BJD in Lok Sabha would remain present in the House, take part in the discussion and would vote against the Motion of Confidence. In support of the above contentions, the petitioner has produced three documents in original, namely, the acknowledgement of the service of the whip by the respondent, attendance sheet regarding the meeting held on 20 July, 2008 and the proceedings of the BJD Parliamentary Party meeting held at 1.00 p.m. on 20 July, 2008 at 9, Talkatora Road, New Delhi. Those documents have been filed as part of the record of these proceedings.

8. The Respondent, by a letter dated 6th August, 2008 addressed to the Joint Secretary, Lok Sabha Secretariat, contended that he had not received any whip whatsoever

from his Party at any point of time either before the Special Session of the Lok Sabha or at any other time. By his letter, he asked for copies of certain documents, which were supplied to him. On 6th October, 2008, the Respondent filed a fuller reply, in which he referred to his illness and of being confined to AIIMS, New Delhi. The Respondent has contended in his final reply that he attended a Luncheon Party in the house of Shri Braja Kishore Tripathy, MP on 20th July 2008 and had signed a plain-sheet, which was produced before him to mark his attendance at the Luncheon Party but no whip was issued to or served on him.

9. According to the Respondent, there was no discussion in that Luncheon Party relating to issuance of whip to the BJD MPs and that there was no occasion for acknowledging the receipt of the whip already issued by the Chief Whip of BJD on 19 July 2008 and that only informally it was mentioned that the MPs of BJD in Lok Sabha would take part in the discussion at the Special Session of the Lok Sabha. He has further contended that on that date he had left the place without taking food as he was not "feeling all right".

10. According to the Respondent, certain resolution, which has been recorded on 20 July, 2008 had not been passed when he was present (for about one hour) and according to him, the MPs were only asked to attend the Lunch. He has alleged that he suspected that the Petitioner "has misled the hon'ble Speaker by fudging the papers and misrepresenting certain imaginary events without an iota of truth".

11. The Respondent has further contended in his reply that a plain-sheet of paper, which contained his undated signature, has been subsequently interpolated to prove the signatures of the MPs including his own which might have been recorded on a different occasion. The acknowledgement referred to by the Respondent is as follows:

"Acknowledgement of Three Line Whip issued on dated 19-07-2008 by the Chief Whip of BJD in Lok Sabha to all the Members of Parliament of Biju Janata Dal in Lok Sabha."

12. The Respondent has further contended that there was no such acknowledgement ever taken from him on 19th July 2008 nor any whip was served on him. The Respondent has contended that the documents referred to by the Petitioner are fraudulent and fabricated and that the action of the Petitioner was *mala fide*.

13. Therefore, according to the Respondent, though he was present at the meeting of 20 July, 2008 at 9 Talkatora Road, New Delhi, where the Biju Janata Dal MPs had assembled and had signed one Attendance Sheet, he was not aware of any resolution passed nor was any resolution recorded in his presence. Regarding the document containing the acknowledgment as stated before, the Respondent's contention is that it has been manipulated and put in subsequently.

14. I gave a personal hearing to the parties on 26 September, 2008 at which the Petitioner was present. At the hearing, I read out a letter dated 12 September, 2008 which had been received from the Respondent in which he stated that he would like to have an opportunity to explain the circumstances in which he had cast his vote in the Lok Sabha on the Confidence Motion, but because of his illness, he wanted time to appear in the proceedings for personal hearing. In that letter he further mentioned that if no time was given for personal hearing, then his reply dated 6th September, 2008 might be considered for a decision by me.

15. At the said hearing, the Petitioner made some general submissions as will be found in the Minutes of the personal hearing of that date. However, in view of the request made by the Respondent, I fixed the next date of hearing at 3 p.m. on 17 October, 2008 and directed the Office to communicate the order to the Respondent.

16. At the hearing held on 17 October 2008, the Petitioner was present but not the Respondent. The Petitioner contended that the Respondent had accepted the fact that he had attended the Parliamentary Party Meeting on 20 July 2008 and the matter should be decided accordingly. Meanwhile, one Shri Ratan Swain, describing himself to be the son of the Respondent had sent a letter (without any date) stating that his father Shri Harihar Swain (the Respondent) was not in a position to attend the hearing of the matter because of his illness and because of his hospitalisation and a medical certificate of Ayush Hospital, Bhubaneswar was also sent. As I did not want to hear the matter in the absence of the Respondent, which might be considered as violation of the principles of natural justice, I fixed the next hearing of the matter at 5 p.m. on Friday, 31 October, 2008 with a direction that the Respondent may be informed that if, unfortunately, he was unable to attend the meeting, he may depute his lawyer or representative to attend the hearing, which was peremptorily fixed and that no further adjournment would be allowed. I directed that my order should be communicated to the Respondent and his son, Shri Ratan Swain, I express my thanks that Shri Mahtab did not object to the adjournment, as I wanted to give another opportunity to the Respondent because of his illness.

17. The last date of personal hearing was 31 October, 2008 at which the Petitioner and Shri Ratan Swain, representing his Father, the Respondent, appeared. The Petitioner reiterated his contention that there was sufficient evidence to show that the Respondent attended the Party meeting on 20 July and had signed the acknowledgment of the receipt of the Whip and was a party to the resolution recorded there. The Petitioner contended that the Respondent, having voted contrary to the Whip, in favour of the Motion of the Confidence, should be disqualified.

18. Shri Ratan Swain at the hearing said and I quote:

"Sir, I have nothing to say, I just wanted to come here to say that for the past two months, he is not

keeping well. He was admitted in Ayush Hospital at Bhubaneswar, and then he was referred to AIIMS. For the past one week or so, he is in Delhi.

MR. SPEAKER: He is ill. Is he still in the hospital?

SHRI RATAN SWAIN: Yes, Sir. He is still in the hospital."

19. In response to my query, the Petitioner, at the said hearing, reiterated of his personal knowledge that the Whip was served on the Respondent and also on all the Members of his Party on 19 July, 2008 and some Members had put their signatures stating the date and some had not and that later on, on 20 July 2008, at their Leader's residence when they met in the afternoon, a resolution was also passed, which was followed by lunch; in which the Respondent did not participate.

20. At the hearing, the Petitioner filed the documents mentioned earlier regarding the acknowledgment of the Whip as well as the proceedings of the Luncheon Meeting of 20 July, 2008. To my specific query, Mr. Ratan Swain said that he had nothing to say in the matter.

21. Paragraph 2(1) (b) of the Tenth Schedule to the Constitution provides that subject to the provisions of paragraphs 4 and 5, a Member of the House belonging to any political party shall be disqualified for being a Member of the House, if he votes or abstains from voting in such House contrary to any direction issued by the political party to which he belongs, without obtaining the prior permission of such political party or without obtaining the condonation of the political party for such voting or abstention. In the present case, the provisions of paragraphs 4 and 5 have no application.

22. In the decision of Dr. Mahachandra Prasad Singh *Versus* Chairman, Bihar Legislative Council and others (2004) 8 SCC 747, the hon. Supreme Court has been pleased to observe that under the Tenth Schedule, "the final authority to take a decision on the question of disqualification of a Member of the House vests with the Chairman or the Speaker of the House. It is to be noted that the Tenth Schedule does not confer any discretion on the Chairman or Speaker of the House. Their role is only in the domain of ascertaining the relevant facts. Once the facts gathered or placed show that a Member of the House has done any such act which comes within the purview of subparagraphs (1), (2) or (3) of paragraph 2 of the Tenth Schedule, the disqualification will apply and the Chairman or the Speaker of the House will have to make a decision to that effect."

23. As already stated, I gave due opportunity to the parties to present their respective cases at the personal hearing given to them, for which I held three sittings. I

have fully considered the replies and statements, which have been filed by the Respondent and also heard the Petitioner personally. From the pleadings and the documents as well as the records of personal hearing, I am of the view that the Respondent had voted in the House on 22 July, 2008 contrary to the direction issued by his Political Party, BJD to which he belongs, in spite of the receipt of the Whip by him.

24. In my opinion, the documentary evidence, apart from the oral statements of the Petitioner placed before me, duly establish that though the Respondent had been ill, he did attend the lunch at the leader's residence on 20 July, 2008 and also the proceedings of the House and cast his vote in favour of the Motion, contrary to the Party Whip and direction. There is no reason for me to discard the statement of the petitioner and the documentary evidence produced before me and there is no reliable evidence to the contrary.

25. Therefore, after giving my anxious consideration to the materials before me and considering the fact the Respondent has admitted that he was present at the meeting of BJD on 20 July 2008 and he signed the two documents, as mentioned above, and has admitted his signatures, it seems to me that the Respondent voted in favour of the Motion in violation of the Whip issued on him by his Party.

26. As Speaker, my primary obligation is to ascertain the relevant facts, as has been held by the hon'ble Supreme Court. Having come to the conclusion that the Respondent voted in favour of the Motion of Confidence contrary to the direction of his Party, on 22 July 2008, the act of the Respondent comes within the purview of paragraph 2(1) (b) of the Tenth Schedule to the Constitution and I decide accordingly.

27. Thus I hold that the Respondent, Shri Harihar Swain, an elected Member of the Lok Sabha from Aska Lok Sabha Constituency of Orissa has incurred disqualification under paragraph 2 (1) (b) of the Tenth Schedule of Constitution by casting his vote in favour of the Confidence Motion moved by the hon'ble Prime Minister of India at the voting held on 22 July, 2008.

28. Thus the Respondent stands disqualified for continuing as a Member of the 14th Lok Sabha and it is declared that his seat has fallen vacant.

New Delhi

Dated the 10 December, 2008

Sd/-
SOMNATH CHATTERJEE, Speaker

[No. 46/24/2008]
P.D.T. ACHARY, Secy.-General